International Journal of Education and Science Research Review
E- ISSN 2348-6457
Volume-1, Issue-3 June- 2014 P- ISSN2349-1817
WWW.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

# "राजस्थान के झुन्झुनूं जिले की उच्च, मध्यम और निम्न वर्ग के सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) की प्राथमिकता का अध्ययन।"

**डॉ मनोज झाझडिया**
Principal,Kanoria B.Ed. College
Mukundgarh

**डॉ राजेन्द्र प्रसाद**
H.O.D,Faculty of Education
J.J.T. University Chudela Jhunjhunu, Raj

## 1.1 प्रस्तावना

मानव जीवन के समस्त क्षेत्रों के सर्वांगीण विकास का माध्यम 'षिक्षा' ही है षिक्षा मानव जीवन का महत्वपूर्ण लक्ष्य होने के साथ–साथ वांछनीय लक्ष्यों की पूर्ति का एक उपयोगी साधन भी है। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं बुद्धि का विकास कर उसे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक कार्यों को करने के योग्य बनाती है किसी भी राश्ट्र का समग्र विकास एवं समृद्धि वहाँ के सुयोग्य नागरिकों पर निर्भर है। यह तभी संभव है जब देष के नागरिकों को पूर्ण रूप से षिक्षित किया जा सके।

भारतीय समाज विष्व के प्राचीनतम समाजों में से है किन्तु वर्तमान स्वरूप वैसा नहीं है। यह भी परिवर्तन के प्रवाह में बदला रहा तथा इसकी संस्थाओं, परंपराओं, अर्थव्यवस्था, राजनैतिक एवं षैक्षिक व्यवस्था, कला साहित्य एवं संस्कृति में बदलाव आता रहा है। यहाँ सांस्कृतिक बहुलतावाद को अनेक रूपों में देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए एक तरफ धनवान, उच्च जातियाँ, उच्च वर्ग के लोग हैं, दूसरी तरफ अत्यधिक निर्धन निम्न जाति के लोग हैं। विभिन्न जातियों, धर्मों क्षेत्रों एवं भाशाओं के संबंध में समूह पूरे देष में फैले हुए हैं। बहु संख्यक समूह भी अनेक सम्प्रदायों, जातियों, गौत्रों और भाशीय समूह में विभक्त हैं। सभी लोगों के लिए अच्छी षिक्षा, रोजगार और जीवन स्तर समान रूप से प्राप्त नहीं हैं।

## 1.2 अध्ययन की आवष्यकता एवं महत्व

सभी व्यक्तियों में व्यक्तिगत विभिन्नता पाई जाती है। वे एक–दूसरे से षारीरिक, मानसिक क्षमताओं, रूचियों, अभिवृत्तियों, मूल्यों तथा आत्म सम्प्रत्यय के आधार पर भिन्न–भिन्न होते हैं। यहाँ हम विद्यार्थी की वृत्तिक प्राथमिकता से पहचान पाएँगें कि विद्यार्थी की किस क्षेत्र मे वृत्ति अधिक है। इस प्रकार उस विद्यार्थी को उसी क्षेत्र में निर्देषन व प्रोत्साहन देकर आगे बढने के लिए प्रेरित करके उसका अधिकतम विकास करने के लिए प्रेरित करके उसका अधिकतम विकास करने का प्रयास कर सकें ताकि भविश्य में वह उस क्षेत्र में उच्च उपलब्धि प्राप्त कर सके।

वृत्ति के चुनाव में व्यक्ति के सामाजिक परिवेष का भी प्रभाव पड़ता है साथ ही वृत्ति निर्देषन भी आवष्यक होता है, ताकि विद्यार्थी अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुरूप अपने भावी जीवन के लिए उचित कैरियर की प्राप्ति हेतु तैयारी कर सके।

## 1.3 शब्दों का परिभाशीकरण

### 1. 3.1 सामजिक एवं आर्थिक स्तर

सामाजिक आर्थिक स्तर व्यक्ति के समूह जाति या वर्ग की अन्य समूह या वर्गों के संदर्भ में उसकी स्थिति, व्यक्ति की वार्शिक आय, व्यक्ति की समूह या समाज में अन्य राजनैतिक या सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों तथा व्यक्ति के कुटुम्ब की वर्तमान या पुस्तैनी सामाजिक परिस्थिति से संबंधित होता है।

1. **उच्च वर्ग**

उच्च वर्ग में सामान्यतः मिल मालिक, उच्च प्रषासन, ख्याति प्राप्त चिकित्सक अर्थात प्रतिश्ठित व्यक्ति आदि आते हैं। ये प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सरकार के नीति निर्धारणों व सत्ता में हस्तक्षेप करते हैं। समाज में इनका उच्चतम स्थान होता है।

2. **मध्यम वर्ग**

यह उच्च वर्ग से निम्न तथा निम्न वर्ग से उच्च होता है अर्थात मध्य का वर्ग या मध्यम वर्ग कहलाता है। इस वर्ग के सदस्यों में अनेक भिन्नताएँ मिलती हैं, जैसे व्यवसाय, वेशभूशा, दृश्टिकोण आदि यह अपनी परंपराओं, मूल्यों तथा प्रतिमानों का सम्मान करते हैं तथा यह समाज में उच्च स्थान प्राप्त करने के लिए गतिषील होते हैं। यह सरकार की नीति के संबंध में जागरूक होते हैं। यह सरकार की नीति के संबंध में जागरूक होते हैं, परन्तु इनका उनके निर्धारक में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं होता है।

3. मध्यम वर्ग से निम्न स्तर माने जाने वाल निम्न वर्ग कहलाता है। निम्न स्तरध्वर्ग के सदस्य सामान्यतः श्रमिक निम्नतम आय प्राप्त नौकर आदि हैं। इनकी सामाजिक प्रतिश्ठा सबसे निम्न होती है तथा इनमें से एक बड़ा वर्ग अशिक्षित होता है। इस वर्ग की बहुत सी समस्याएँ हैं जिनके कारण बाल अपराध, नशबंदी, व्याभिचार, चोरी जैसी समस्याएँ समाज में उत्पन्न होती हैं।

**1.3.2 वृत्ति**

वृत्ति सीधे–सादे षब्दों में व्यवसाय जीविका उपार्जन का तरीका होता है। यह एक व्यापक शब्द है। इसमें कृशि, उद्योग, नौकरी, मछली पालन आदि वे सभी रोजगार सम्मिलित होते हैं जिनसे कोई मानव–समूह अपने जीवन–यापन के लिए आवष्यक साधन और सुविधा अर्जित करता है। इस दृश्टि से वृत्ति एक विषिश्ट व्यवसाय है।

**1.3.3 वृत्ति प्राथमिकता**

वृत्ति षब्द वर्तमान समय में व्यापक आधार प्राप्त करते हुए एक वृहद् दर्षन को प्राप्त हो गया है। वर्तमान समय में मनुश्य की मूल आवष्यकताओं का पैमाना विस्तृत होता जा रहा है, आज के समय में मात्र रोटी, कपड़ा और मकान की मूल आवष्यकताओं में षिक्षा तथा स्वास्थ्य भी अनिवार्य रूप से षामिल हो गये हैं। अपने वांछित लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वह अपनी वृत्ति प्राथमिकताओं का निर्धारण कर अपने परिश्रम एवं लगन से उच्च जीवन–वृत्ति को प्राप्त करता है।

**1.4 व्यावसायिक वृत्ति**

व्यावसायिक वृत्ति की परिभाशा यूनेस्को ने दी– व्यावसायिक षिक्षा एक व्यापक प्रत्यय है। इसके अन्तर्गत षैक्षिक प्रक्रिया के सभी पक्ष तथा सामान्य षिक्षा, तकनीकी षिक्षा, विज्ञान से संबंधित अतिरिक्त प्रयोगषाला कौषल, अभिवृत्तियों, ज्ञान तथा बोध से संबंधित अतिरिक्त पक्षों को सम्मिलित किया जाता है। जिनका संबंध आर्थिक, सामाजिक जीवन तथा रोजगार की तैयारी सभी से होता है। इस प्रकार की षिक्षा सामान्य षिक्षा का समन्वित खण्ड सतत् षिक्षा तथा रोजगार क्षेत्र की तैयारी होता है।

**1.5 शिक्षा का व्यावसायिकरण**

व्यावसायिकरण का अर्थ होता है व्यावसायिक विशयों के विद्यालय तथा महाविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में स्थान दिया जाए जिससे छात्र अपनी षिक्षा पूर्ण करने के बाद अपनी जीविका अर्जन में सक्षम हो सके। षिक्षा के व्यावसायिकरण से तात्पर्य होता है कि छात्र को आत्म–निर्भर बनाना। इसमें बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना। छात्र की प्रवणता और अभिरूचियों का मापन करके उसके अनुरूप उत्तम व्यावसायिक क्षमताओं का विकास करना है।

**1.6 शोध के उद्देष्य**

षोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देष्यों को सम्मिलित किया गया है–

1. उच्च, मध्यम और निम्न वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. उच्च, मध्यम और निम्न वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक व्यावसायिक (वृत्ति) का अध्ययन करना।
3. उच्च, मध्यम और निम्न वर्ग के ग्रामीण व षहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) का अध्ययन करना।

**1.7 शोध की परिकल्पना**

1. उच्च, मध्यम और निम्न वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. ग्रामीण क्षेत्र के उच्च, मध्यम और निम्न वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. शहरी क्षेत्र के उच्च, मध्यम और निम्न वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. उच्च वर्ग के ग्रामीण व षहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. मध्यम वर्ग के ग्रामीण व षहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
6. निम्न वर्ग के ग्रामीण व षहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

**1.8 अध्ययन के चर**

1. **स्वतंत्र चर**

   प्रस्तुत षोध में स्वतंत्र चर उच्च, मध्यम और निम्न वर्ग के सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थी हैं।

2. **आश्रित चर**

   प्रस्तुत षोध में आश्रित चर विद्यार्थियों की वृत्ति प्राथमिकताएँ हैं।

**1.9 अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्ष**

प्रस्तुत षोध में षोधकर्त्री ने झुन्झुनूं जिले के गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों से उच्च मध्यम निम्न वर्ग के 120 ;40,40,40द्ध विद्यार्थियों का चयन किया है जिसमें ग्रामीण व षहरी दोनों है।

**1.10 अध्ययन में प्रयुक्त शोध विधि**

प्रस्तुत षोध कार्य के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। सर्वेक्षण विधि से तात्पर्य ऐसे अध्ययन से है जिसमें शोधकर्त्ता को उस स्थान पर जाकर परिस्थिति से संबंधित सही सूचनाओं को एकत्रित करना होता है।

**1.11 उपकरण**

- **सामाजिक–आर्थिक स्तर मापन**
  (राजीव लोचन भारद्वाज द्वारा निर्मित)
- **कैरियर प्राथमिकता प्रपत्र**
  (विवेक भार्गव एवं राजश्री भार्गव द्वारा निर्मित)

**1.12 सांख्यिकीय प्रविधियाँ**

(1) मध्यमान (डमंद)
(2) प्रमाणिक विचलन (जंदकंतक क्मअपंजपवद)
(3) टी अनुपात (ज.अंसनम)
(4) एनोवा परीक्षण

**1.13परिसीमांकन**

1. प्रस्तुत षोधकार्य कार्य के लिए राजस्थान के झुन्झुनूं जिले की चिड़ावा तहसील का चयन किया गया है।
2. शोधकार्य में गैर–सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के ग्रामीण एवं षहरी विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।
3. प्रस्तुत षोध कार्य के लिए उच्च माध्यमिक स्तर पर उच्च, मध्यम व निम्न वर्ग के 120 ;40ण्40ण्40द्ध विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।
4. प्रत्येक वर्ग के 40 विद्यार्थियों में 20 ग्रामीण व 20 षहरी विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

**सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन**

(1) **सोलंकी आर. बी.** ;1979द्ध रू प्रथम वर्श कॉलेज के विद्यार्थियों की षैक्षिक उपलब्धि व उनके घरेलू वातावरण सामाजिक आर्थिक स्तर व आर्थिक प्रबन्ध के बीच अध्ययन।
विद्यार्थियों की षैक्षणिक योग्यताओं का संबंध उनके घरेलू वातावरण से पाया गया।

1. षैक्षिक उपलब्धियों का संबंध षैक्षणिक एवं भावनात्मक वातावरण से पाया गया।

(5) **श्री वास्तव, आर.** ;2008द्ध रू ''जाति और धर्म से संबंधित जीवन वृत्ति ओरिएन्टेषन''
अध्ययन किया और टिप्पणी की कि सामान्य और पिछड़ी जातियों में जीवन वृत्ति ओरिएन्टेषन में कोई भी महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है, जबकि निम्न वर्ग में जीवन वृत्ति ओरिएन्टेषन उच्च और मध्यम वर्ग से कमजोर है।

(6) **शर्मा पूनम एवं कुमार मुकेष** ;2007द्ध रू ''वैज्ञानिक प्रषासकीय अनुकरणीय और घर के पहलु में रोजगार, रूचि वाले क्षेत्र का अध्ययन''
ग्रामीण विद्यार्थियों में महत्वपूर्ण अंतर की ओर इषारा किया और उन्होंने ग्रामीण व षहरी विद्यार्थियों में साहित्यिक, औद्योगिक निर्माण संबंधित, कलात्मक, कृशि संबंधी और सामाजिक रोजगार रूचि क्षेत्रों पर कोई भी महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया।

(18) **यादव, आर.के.** ;2000द्ध रू ''सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं युवाओं की रोजगार पसंदगी के संबंध''
अध्ययन में पाया गया कि अधिकतर विद्यार्थी प्रषासकीय कार्य को पसंद करते है और कलात्मक कार्य व संगीत में सबसे कम रूचि दर्षाते हैं।

((27) **इकोनोमिक कारपोरेषन एण्ड डवलपमेंट** ;ब्व्द्ध **व प्रोगाम फार इन्टरनेषनल स्टेन्ड असेसमेंट** ;2001द्ध रू ''में सामाजिक–आर्थिक स्तर को एक महत्वपूर्ण चर के रूप में अध्ययन किया। जो विद्यार्थी की षैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। यह अध्ययन कनाडा के गणित व विज्ञान के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर किया गया।

**1.14 अध्ययन में प्रयुक्त शोध विधि**

षैप्रस्तुत षोध कार्य की समस्या व प्रकृति को देखते हुए षोधकर्त्री द्वारा दत्त संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

**1.15 जनसंख्या**

किसी भी अनुसंधान हेतु जनसंख्या का निर्धारण करना प्रमुख कार्य होता है। इकाइयों के समूह को, जिसके लिए चर का मान निकालना अभिश्ट है, जनसंख्या कहते हैं। जनसंख्या का अर्थ अध्ययन की इकाइयों के समूह के रूप में भी लगाया जा सकता है।

**1.16 प्रस्तुत शोध अध्ययन के न्यादर्श**

प्रस्तुत षोध प्रबंध हेतु जनसंख्या झुन्झुनूं जिले के चिड़ावा तहसील के उच्च, मध्यम व निम्न वर्ग के समस्त 11वीं तथा 12वीं स्तर के विद्यार्थी हैं जिनकी संख्या हजारों में है। इस सम्पूर्ण जनसंख्या पर अध्ययन संभव नहीं है, अतः धन, समय व साधनों की सीमितताओं के कारण षोधकर्त्री ने अध्ययन के अभिश्ट उद्देष्यों की प्राप्ति के लिए झुन्झुनूं जिले के 120 ;40,40द्ध विद्यार्थियों को न्यादर्ष के रूप में चुना है।

### 1.17 प्रस्तुत षोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत षोध में षोधकर्त्री ने षोध के उद्देष्यों की दृश्टि से निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया है–

1. **सी.पी.आर. (वृत्ति प्रपत्र)**
   **(डॉ. विवेक भार्गव व डॉ. श्रीमती राजश्री भार्गव)**
2. **सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी**
   **(आर. एल. भारद्वाज)**

### 1.18 शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

1. **मध्यमान ;डमंदद्ध**
2. **प्रमाप विचलन ;ैजंदकंतक क्मअपंजपवदद्ध**
3. **मानक त्रुटि ;ैम्क्द्ध**
4. **टी वैल्यू या क्रांतिक अनुपात ;ज अंसनम वत बतपजपबंस तंजपवद्ध**
5. **प्रसरण विष्लेशण**

### 1.19 प्रस्तुत षोध के तथ्यों का विष्लेशण एवं व्याख्या प्रस्तुत षोध

**परिकल्पना–** 1

''उच्च, मध्यम व निम्न वर्ग के सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) में सार्थक अंतर नहीं है।''

| अंतपंदबम | कि | ै | डे | ि |
|---|---|---|---|---|
| ठह | 2 | 346ण्67 | 173ण्33 | 0ण्30 |
| ँह | 117 | 670ण्73 | 527ण्27 | |

**विष्लेशण**

उपरोक्त तालिका उच्च, मध्यम व निम्न वर्ग के सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक वृत्ति प्राथमिकता के प्राप्तांकों के मध्य बनी चरिता का एक मार्गी विष्लेशण प्रदर्षित करती है।

यहाँ प्रसरण विष्लेशण ;थ्द्ध का मान 0ण्30 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता स्तर 0ण्05 के थ अनुपात के मान 3ण्07 व 0ण्01 के सार्थकता स्तर थ अनुपात के मान 4ण्78 दोनों से कम है। अतः हमारी षून्य परिकल्पना उच्च, मध्यम व निम्न वर्ग के सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) में सार्थक अंतर नहीं है, निरस्त नहीं होती है। अर्थात तीनों समूहों की संकल्पना प्राप्ति एक समान है।

इसका कारण यह हो सकता है कि विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) प्राथमिकताओं पर विद्यार्थियों के विभिन्न वर्गों तथा सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव नहीं पड़ता है

**परिकल्पना–** 2

''ग्रामीण क्षेत्र के उच्च, मध्यम व निम्न वर्ग के सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) में कोई सार्थक अंतर नहीं है।''

| अंतपंदबम | कि | ै | डे | ि |
|---|---|---|---|---|
| ठह | 2 | 11460 | 5730 | 8ण्28 |
| ँह | 57 | 39424 | 691ण्64 | |

**विष्लेशण**

उपरोक्त तालिका ग्रामीण क्षेत्र के उच्च, मध्यम व निम्न वर्ग के सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक वृत्ति प्राथमिकता के प्राप्तांकों के मध्य बनी चरिता का एक मार्गी विष्लेशण प्रदर्षित करती है।

यहाँ प्रसरण विष्लेशण ;थ्द्ध का मान 8ण्28 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता स्तर 0ण्05 के थ अनुपात के मान 3ण्07 व 0ण्01 के सार्थकता स्तर थ अनुपात के मान 4ण्78 दोनों से अधिक है। अतः हमारी षून्य परिकल्पना ग्रामीण क्षेत्र के उच्च, मध्यम व निम्न वर्ग के सामाजिक–आर्थिक

स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) में सार्थक अंतर है, निरस्त होती है। अर्थात तीनों समूहों की संकल्पना प्राप्ति एक समान नहीं है। इसका कारण यह हो सकता है कि इन वर्गों के विद्यार्थियों को विभिन्न रोजगार क्षेत्र में चयन के समान अवसर प्राप्त नहीं हुए है।

**परिकल्पना–** 3

''षहरी क्षेत्र के उच्च, मध्यम व निम्न वर्ग के सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) में कोई सार्थक अंतर नहीं है।''

| अंतपंदबम | कि | ै | डे | ि |
|---|---|---|---|---|
| ठह | 2 | 1380 | 690 | 1ण्16 |
| ँह | 57 | 33660 | 590ण्52 | |

**विष्लेशण**

उपरोक्त तालिका षहरी क्षेत्र के उच्च, मध्यम व निम्न वर्ग के सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक वृत्ति प्राथमिकता के प्राप्तांकों के मध्य बनी चरिता का एक मार्गी विष्लेशण प्रदर्षित करती है।

यहाँ प्रसरण विष्लेशण ;थ्द्ध का मान 1ण्16 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता स्तर 0ण्05 के थ अनुपात के मान 3ण्07 व 0ण्01 के सार्थकता स्तर थ अनुपात के मान 4ण्78 दोनों से कम है। अतः हमारी षून्य परिकल्पना षहरी क्षेत्र के उच्च, मध्यम व निम्न वर्ग के सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) में सार्थक अंतर नहीं है, निरस्त नहीं होती है। अर्थात तीनों समूहों की संकल्पना प्राप्ति एक समान है।

**परिकल्पना –** 4

''उच्च स्तर के ग्रामीण व षहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) में कोई सार्थक अंतर नहीं है।''

| अंतपंदबम | N | M | S.D. | SED | D | df | t |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग्रामीण विद्यार्थी | 20 | 125.84 | 8.41 | | | | |
| षहरी विद्यार्थी | 20 | 104.65 | 25.41 | 5.98 | 21.15 | 38 | 3.53 |

**विष्लेशण**

उपर्युक्त तालिका में उच्च स्तर के ग्रामीण व षहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) प्राथमिकता जिनकी संख्या 20.20 है, के मध्य तुलना संबंधी दत्तों को विष्लेशित किया गया है। इनकी वृत्ति प्राथमिकता का मध्यमान क्रमषः 125ण्84 तथा 104ण्65 है तथा प्रमाप विचलन 8ण्41 व 25ण्41 है। तथा दोनों समूहों के प्राप्तांकों का टी. मूल्य 3ण्53 प्राप्त हुआ है। जो सार्थकता स्तर 0ण्01 के मूल्य 2ण्02 तथा सार्थकता स्तर 0ण्05 के मूल्य 2ण्71 दोनों से अधिक है। अतः हमारी षून्य परिकल्पना उच्च स्तर के ग्रामीण व षहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक वृत्ति प्राथमिकता में सार्थक अंतर पाया जाता है, निरस्त होती है।

कारण यह हो सकता है कि ग्रामीण विद्यार्थियों की वृत्ति प्राथमिकताएँ षहरी विद्यार्थियों की वृत्ति प्राथमिकताओं की तुलना में सीमित है

**परिकल्पना संख्या–** 5

''मध्यम स्तर के ग्रामीण व षहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) में कोई सार्थक अंतर नहीं है।''

| अंतपंदबम | N | M | S.D. | SED | D | df | t |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग्रामीण विद्यार्थी | 20 | 93.05 | 24.68 | | | | |
| षहरी विद्यार्थी | 20 | 90.4 | 19.83 | 7.07 | 2.65 | 38 | 0.37 |

**विष्लेशण**

उपर्युक्त तालिका में मध्यम स्तर के ग्रामीण व षहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) प्राथमिकता जिनकी संख्या 20.20 है, के मध्य तुलना

संबंधी दत्तों को विष्लेशित किया गया है। इनकी वृत्ति प्राथमिकता का मध्यमान क्रमषः 93ण्05 तथा 93ण्4 है तथा प्रमाप विचलन 24ण्68 व 19ण्83 है। तथा दोनों समूहों के प्राप्तांकों का टी. मूल्य 7ण्07 प्राप्त हुआ है। जो सार्थकता स्तर 0ण्01 के मूल्य 2ण्02 तथा सार्थकता स्तर 0ण्05 के मूल्य 2ण्71 दोनों से अधिक है। अतः हमारी षून्य परिकल्पना उच्च स्तर के ग्रामीण व षहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक वृत्ति प्राथमिकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है, स्वीकृत होती है।

इसका कारण यह हो सकता है कि मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों का आर्थिक व सामाजिक पक्ष औसत रहता है और ग्रामीण विद्यार्थियों पर ग्रामीण क्षेत्र का प्रभाव रहता है

**परिकल्पना संख्या–** 6

''निम्न स्तर के ग्रामीण व षहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) में कोई सार्थक अंतर नहीं है।''

| अंतपंदबम | N | M | S.D. | SED | D | df | t |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग्रामीण विद्यार्थी | 20 | 103.25 | 25.54 | | | | |
| षहरी विद्यार्थी | 20 | 100.25 | 25.04 | 7.99 | 2.75 | 38 | 0.34 |

**विष्लेशण**

उपर्युक्त तालिका में निम्न स्तर के ग्रामीण व षहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) प्राथमिकता जिनकी संख्या 20.20 है, के मध्य तुलना संबंधी दत्तों को विष्लेशित किया गया है। इनकी वृत्ति प्राथमिकता का मध्यमान क्रमषः 103ण्25 तथा 100ण्25 है तथा प्रमाप विचलन 25ण्54 व 25ण्04 है। तथा दोनों समूहों के प्राप्तांकों का टी. मूल्य 0ण्34 प्राप्त हुआ है। जो सार्थकता स्तर 0ण्01 के मूल्य 2ण्02 तथा सार्थकता स्तर 0ण्05 के मूल्य 2ण्71 दोनों से कम है। अतः हमारी षून्य परिकल्पना निम्न स्तर के ग्रामीण व षहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक वृत्ति प्राथमिकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाता है, अस्वीकृत होती है।

इसका कारण यह हो सकता है कि संचार साधनों की उपलब्धता के कारण इस निम्न वर्ग के विद्यार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों की वृत्ति संभावनाओं का ज्ञान हुआ है।

**परिकल्पनाओं के निश्कर्श**

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर उच्च, मध्यम और निम्न वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसका कारण यह हो सकता है कि विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) प्राथमिकताओं पर विद्यार्थियों के विभिन्न वर्गों तथा सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. उच्च माध्यमिक स्तर पर उच्च, मध्यम और निम्न वर्ग के ग्रामीण विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) प्राथमिकताओं में सार्थक अंतर पाया गया। इसका कारण यह हो सकता है कि इन वर्गों के विद्यार्थियों को विभिन्न रोजगार क्षेत्र में चयन के समान अवसर प्राप्त हुए है।
3. उच्च माध्यमिक स्तर पर उच्च, मध्यम और निम्न वर्ग के षहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) प्राथमिकताओं में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसका कारण यह हो सकता है कि इन वर्गों के विद्यार्थियों को विभिन्न रोजगार क्षेत्र में चयन के समान अवसर प्राप्त हुए है।
4. उच्च माध्यमिक स्तर पर उच्च वर्ग के ग्रामीण व षहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) प्राथमिकताओं में सार्थक अंतर पाया गया। इसका कारण यह हो सकता है कि ग्रामीण विद्यार्थियों की वृत्ति प्राथमिकताएँ षहरी विद्यार्थियों की वृत्ति प्राथमिकताओं की तुलना में सीमित हैं।
5. उच्च माध्यमिक स्तर पर मध्यम वर्ग के ग्रामीण व षहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) प्राथमिकताओं में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसका कारण यह हो सकता है कि मध्यम वर्ग के विद्यार्थियों का आर्थिक व सामाजिक पक्ष औसत रहता है और ग्रामीण विद्यार्थियों पर ग्रामीण क्षेत्र का प्रभाव रहता है।
6. उच्च माध्यमिक स्तर पर निम्न वर्ग के ग्रामीण व षहरी विद्यार्थियों की व्यावसायिक (वृत्ति) प्राथमिकताओं में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसका कारण यह हो सकता है कि संचार साधनों की उपलब्धता के कारण इस निम्न वर्ग के विद्यार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों की वृत्ति संभावनाओं का ज्ञान हुआ है।

7. **सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**

1. जायसवाल, सीताराम ''षिक्षा में निर्देषन और परामर्ष'' आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, 2009
2. षर्मा, (श्रीमती) आर. के वृत्ति निर्देषन में वृत्ति सूचन एवं अन्य राधा प्रकाषन मंदिर, 2009

3. त्यागी, गुरसरनदास षिक्षा के सिद्धांत, आगरा, विनोद पुस्तकएवं अन्य मंदिर, 2004.05
4. भटनागर, ए.बी. षैक्षिक एवं मानसिक मापन, मेरठ, आर.एवं अन्य लाल. बुक डिपो, 2008
5. अस्थाना व अस्थाना मनोविज्ञान और षिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर,2005
6. त्यागी, गुरसरनदास उदीयमान भारत में षिक्षा, आगरा, विनोद एवं अन्य पुस्तक मंदिर, 2008
7. मंगल, अंषु व अन्य षैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ, समंक विष्लेशण एवं षैक्षिक सांख्यिकी, आगरा, राधा प्रकाषन मंदिर, 2004
8. श्री वास्तव, डी.एन. मनोविज्ञान और षिक्षा में सांख्यिकी, एवं वर्मा, प्रीति आगरा,विनोद पुस्तक मंदिर, 2005
9. शर्मा, सरोज षिक्षा एवं भारतीय समाज, जयपुर, ष्याम प्रकाषन, 2008
10. शर्मा,, बी.एल. षैक्षिक एवं मानसिक मापन, मेरठ, आर. एवं प्रताप नरेष लाल. बुक डिपो, 2007
11. बैस, नरेन्द्रसिंह षैक्षिक एवं उदीयमान भारतीय समाज, एवं दत्ता संजय जयपुर, जैन प्रकाषन मंदिर, 2008
12. शर्मा, आर.ए. षैक्षिक एवं मानसिक मापन, मेरठ, आर. लाल. बुक डिपो, 2007
13. शर्मा, आर.ए. वृत्तिक निर्देषन एवं रोजगार सूचना, मेरठ, आर. लाल. बुक डिपो, 2008
14. सुखिया, एस.पी. षैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, 1994.95
15. पारीक, मधुरेष्वर उदीयमान भारतीय समाज और षिक्षा, एवं रजनी षर्मा जयपुर, षिक्षा प्रकाषन, 2007
16. 16 शर्मा, आर.ए. षिक्षा अनुसंधान, मेरठ, आर. लाल. बुक डिपो, 2007
17. 17 भार्गव, (श्रीमती) राखी मनोविज्ञान और षिक्षा में सांख्यिकीय तालिकायें, आगरा राखी प्रकाषन, 1995
18. बोगार्डस षैक्षिक अनुसंधान विधि षास्त्र, जयपुर हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1982
19. बेस्ट जॉन डब्ल्यू रिसर्च एन एजूकेषन, प्रेटिस हॉल एंगल बुक क्लिपस, 1982
20. दुबे सत्य मिश्र समाजषास्त्र एक परिचय, राष्ट्रीय षैक्षिक शर्मा, दिनेष अनुसंधान परिशद्

**पत्र–पत्रिकाएँ**

1 थोमस, एस. सिमोन्स पी.सीम रू ''डिफरेन्ट सैकण्डरी स्कूल स्टूडेंट एकेडमिक एचिवमेंट इन रिलेसन्स टू सोषो इकोनोमिक स्टेट्स'' न्यूर्याक, 2009
2 कोलकयंग 'स्टूडेन्ट परसेप्षन ऑफ सोषोइकोनोमि उपोरचुर्निट्स एण्ड बैरियर इट्स रिले इन एकेडमिक एचिवमेंट'', साउथ एजूकेषन रिसर्च एसोसिएषन, 2006
3 पाण्डेय ज्ञानेन्द्र 'प्रारंभिक षिक्षा का परिवर्तित स्वरूप'', योजना पाक्षिक पत्रिका, पत्रिका प्रकाषन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्राल भारत सरकार, नई दिल्ली।
4 रॉटस, जे.बी. ''लेवल ऑफ एस्पिरेषन एस.ए. थक ऑफ स्टीइंग पर्सनल्टी ग्रुप वलेडिटी स्टीइस कैरेक्टर एड पर्सन'', 1943 वोल्यूम 6ए पृश्ठ संख्या 254.279
5 राजस्थान में षिक्षा अनुसंधान : षिक्षा विभाग समप्राप्तियाँ एवं सम्भावनाएँ राजस्थान बीकानेर
6 षिविरा मासिक (पत्रिका) निदेषालय प्राथमिक एवं माध्यमिक षिक्षा विभाग, बीकानेर।
7 ह्यूमन रिर्सोस डेवलपमेंट एण्ड काउंसिल मिनिस्टरी ऑफ एजूकेषन कनाडा के यूथ का सामाजिक स्तर का षैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में अध्ययन, 2001
8 षोध प्रतिवेदन, विकास अध्ययन संस्थान, जयपुर।
9 भारतीय षिक्षा षोध पत्रिका वाल्यूम 31ए छवण 1ए जनवरी जून 2012ण
10 `भारती ए. रू स्टेटी ऑफ सेल्फ, कान्सेप्ट एण्ड एचीवमेन्ट मोटीवेसन्स ऑफ अरली, पी. एच.डी., साइक्लोजी ओ.एस.एम. युनिवसर्टी 1964ण
11 वासन्या रामकुमार रू इन्टेलिजेन्सएण्ड सेल्फ, कोन्सेप्ट, ऐन्यूकेषनल साइक्लोजी रिव्यु 1970, पेज नं. 154.457ण
12 ओझा रू रिलेषन ऑफ एचीवमेन्ट मोटीवेषन टू पेरेन्टल निहेवियर एण्ड सरटेल सोष्पो, इकोनोमिक वेरीबल्स, पी.एच.डी. इन साइक्लोजी भागलपुर विष्वविद्यालय 1973ण
13 मैक्लीलैण्ड डी.सी. रू टुवार्डस थ्योरी ऑफ मोटीव एज्युकेषन अमेरिकन साइक्लोजिस्ट 1965ण
14 ल्कंकंअए च्ैण रू मॅमिबज वि उेंजमतल समंतदपदह`जतंजमहल वद चनचपसे ।बीपअमउमदजण
15 क्नजजंए बेंदकतंउंससपा रू ।ैजनकल वि पदजमससपहमदबम चमतेवदंसपजल ंदक ंबंकमउपब ंबीपअउमदज वि ीमउवचीपससमब बीपसकमतद ;कमचंतजउमदज वि ।चचसपमक चेलबीवसवहलए नदपण वि बंसबनजजंए ।वसांजंण
16 श्रवीपए ैतन रू मॅमिबज वि ीविउम ंदक ैबीववस पदअपवतदउमदज वद जीम ंबंकमउपब ंबीपअमउमदज वि ैबीववस हवपदह बीपसकमतद पद.त्प.ठीवप क्पेजतपब वि डमहींसंलं ;छवतजी मेंजमतद भ्पसस नदपअमतेपजलए ैीपससवदद्धण